



बातूनी कछुआ

पुनर्कथन जीवा रघुनाथ

मैं कौन-सी कहानी सुनाऊँ – मैं कैसे आया या मैं कैसे गया? मैं वहाँ रहता था, उस तालाब के पास। दो पंछी मेरे मित्र थे, गंगा और यमुना। मैं जब भी उन्हें देखता, बक बक बक बक, मैं बोलता रहता।

सुबह मिलो, बक बक.... दोपहर में मिलो, बक बक... रात में मिलो, बक बक... मेरी इस बक बक से तंग आकर उन्होंने तय किया कि वे किसी और तालाब पर जाएँगे। ऊँ..... हूँ..... मैं रोने लगा।

मेरे मित्रों को बुरा लगा। “ठीक है,” वे बोले। “साथ आओ, लेकिन ज़रूर मुँह बंद रखना और बिलकुल बात मत करना।” “लेकिन...लेकिन...मेरे तो पंख नहीं हैं!” मैंने कहा।

Story and Artwork:



Tulika





उन्होंने एक डंडी ली। गंगा ने एक सिरा पकड़ा। यमुना ने दूसरा सिरा पकड़ा।
मैंने बीच में पकड़ लिया।

फड़ फड़, हम ऊँचे उड़े। सब ठीक था, जब तक.... बक बक बक बक... मैंने
अपना मुँह खोला।

ओ.....! बस, मैं ऐसा हो गया।

समाप्त

Click below to follow us:



You Tube

facebook

